जैन बालकों के लिये शुभावसर



सेठिया जैन विद्यालयमें इंग्लिस हिन्दी वणिका (देशी हिसाब-महाजनी) धार्मिक और संस्कृत का विद्याभ्यास होता है। संस्कृत विद्यार्थीओंको न्याय व्याकरण साहित्य और प्राकृत आदि का पूर्ण ज्ञान आचार्य या तीर्थ तक पढाया जाता है, निराधार जैन बालको को विद्याभ्यास के लिये सब खर्चका बंदोबस्त, हमारा तर्फ से कर दिया जाता है। जो पढना चाहे वह रुबरु मिले या पत्र व्यवहार करे

निवेदक—

भैरोदान जेठमल सेठिया

बीकानेर (रजपूताना) J. B. Ry.

श्रीजिनेन्द्राय नमः

अथ श्रीतेतीस बोलका थोकड़ा

सूत्र श्रीउत्तरा ध्ययन समवायाग तथा दशाश्रुतस्कन्ध वगेरहमे तेतीस बोलका थोकडा चले सो कहते है.

(विस्तार अन्य जगहका है)

पहले बोले-एक प्रकारका असयम-सर्व आस्रवसे निवृत्त नहीं होना

दूसरे बोले-दो प्रकारका बन्धन-राग बन्धन और द्वेष बन्धन.

तीसरे बोले-१ तीन प्रकारका दण्ड-१ मनदण्ड, २ वचनदण्ड, ३ कायदण्ड

२ तीन प्रकारकी गुप्ति-१ मनगुप्ति, २ वचनगुप्ति, ३ कायगुप्ति

३ तीन प्रकारका शल्य-१ माया शल्य, २ नियाण (निदान) शल्य, ३ मिथ्या दर्शन शल्य.

४ तीन प्रकारका गर्व-१ ऋद्धिगर्व, २ रसगर्व, ३ सातागर्व

५ तीन प्रकारकी विराधना–१ ज्ञानकी विराधना, २ दर्शनकी विराधना, ३ चारित्रकी विराधना.

चौथे बोले–चार कषाय–१ क्रोध कषाय, २ मान कषाय, ३ माया कषाय, ४ लोभ कषाय.

चार सज्ञा–१ आहार सज्ञा, २ भय सज्ञा, ३ मैथुन सज्ञा, ४ परिग्रह सज्ञा.

चार कथा–१ राज्यकथा, २ देशकथा, ३ स्त्रीकथा, ४ भातकथा (इन चारों सम्बन्धी कथा)

चार ध्यान–१ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्म ध्यान, ४ शुक्लध्यान तथा १ पदस्थ २ पिण्डस्थ, ३ रूपस्थ और ४ रूपातीत ध्यान

पांचमें बोले–पांच क्रिया–१ कायिका, २ अधिकरणिका, ३ प्रद्वेषिका, ४ पारितापनिका, ५ प्राणातिपातिका

पांच कामगुण–शब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श

पांच महाव्रत–१ सर्वथा प्राणातिपातसे निवृत्ति, २ सर्वथा मृषावादसे निवृत्ति, ३ सर्वथा अदत्तादानसे निवृत्ति, ४ सर्वथा मैथुनसे निवृत्ति, ५ सर्वथा परिग्रहसे निवृत्ति (सर्वथा त्रिकरण त्रिजोगसे)

पांच समिति–१ इर्यासमिति, २ भाषासमिति, ३ एषणासमिति, ४ आदान भंडमत्त निक्षेपना समिति, ५ उच्चार प्रस्रवण खेल जल श्लेष्म परिस्थापनिका समिति (इन कामोंमें शुद्ध उपयोग).

पांच प्रमाद–१ मद, २ विषय, ३ कषाय, ४ निद्रा, ५ विकथा.

छठे बोले–छ काय–१पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय.

छ लेश्या–१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, ३ कापोत लेश्या, ४ तेजो लेश्या, ५ पद्म लेश्या, ६ शुक्ल लेश्या.

सातमें बोले–सात भय–१ इहलोक भय–मनुष्यसे मनुष्यको भय

२ परलोक भय–मनुष्यको देवता या तिर्यंचसे भय

३ आदान भय–धन दौलतके नष्ट होनेका भय.

४ अस्मात् भय–घईसे अनजारो आपत्ति आ जावे-अचानक दु:ख आ जावे ऐसा भय

५ आजीवका भय–भविष्यमें खानेपीनेको मीलेगा या नहीं सुखसे गुजर होनेमें बाधा न आ जावे ऐसा भय

६ अपयश भय–किसी तरह इज्जतमें हरकत पहुचे या यश कीर्ति जैसी है वैसी कैसे बनी रहगी ऐसा भय.

७ मरण भय-मौतका डर-कर मरणा यह निश्चित नही है,जैसे हर समय मरणकी शका रखना

आठवें बोले-आठ मद-१ जातिमद, २, कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ तपमद, ६ लाभमद, ७ सूत्रमद, ८ ऐश्वर्यमद (अहकार)

नवमें बोले-ब्रह्मचर्यकी नव गुप्ति-रक्षा-वाडे (१) ब्रह्मचारी पुरुष ऐसे स्थानमें न रहे जहां स्त्री, पशु नपुसक रहते हैं वा वारवार आते जाते हो और रहे तो चूहे और बिल्लीका दृष्टान्त—जिस जगह बिल्ली रहती है उस जगह चूहे, चाहे जितनी सावधानीसे रहे, तोभी उनके मारे जानेका सभव है, तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष स्त्री वगेरह सहित स्थान भोगवे तो उनके ब्रह्मचर्यके खण्डित होनेका सभव है (२) ब्रह्मचारी पुरुष स्त्री सम्बन्धी काम राग बढानेवाली कथा वार्ता कर नहीं और करे तो निम्बु और रसना (जीभ) का दृष्टान्त जैसे निम्बुरसका जानकार जब निम्बुका नाम लेता है कि उसके मुहमें पानी छुटने लगता है-आ जाता है तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष स्त्री सम्बन्धी वार्ता करे तो शीलरत्नके भग होनेकी समावना रहती है (३) स्त्री जिस, ...

साथ भी बैठना नही और बैठे तो कोरा और कणकका दृष्टान्त, जैसे कोरेका फल कणक (भिंजा हुवा आटा) के पास रखाजावे तो वह कणक ज्यादे २ गीला होता जाता है और उसका रसकस घटता जाता है तैसे ही ब्रह्मचारी पुरषका स्त्रीके आसनपर बैठनेसे ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है (४) ब्रह्मचारी पुरुष स्त्रीके अंगोपांग रूप लावण्य निरखे नही–वारवार नजर-भरके देखे नही देखे तो कची आंख और सूर्यका दृष्टान्त, जैसा जन्मता बालक सूर्यको देखे तो अन्धा होजाता है या उसका दृष्टि विषय घट जाता है. तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष स्त्रीके अगउपांग निरखे तो ब्रह्मचर्यका नाश होनेका सभव है, (५) ब्रह्मचारी पुरुष, स्त्रीके रुदन, गीत, हास्य, आक्रंद, कुजित इत्यादि शब्द सुनाई पडे वैसी भींत या टट्टीके आडमें वास करे नहीं (पासके मकानमेंसे भी इनका ध्वनि कानोंमें आताहो वहां न रहे) और रहे तो मेंघ और मोरका दृष्टान्त, मेघके–वादलके गर्जनेपर मोर (मयूर) अवश्य बोलता है–कोकाट करता है तैसेही स्त्रीके हास्यादिके शब्द सुननेपर काम राग बढता और ब्रह्मचर्य खण्डित होनेका सभव रहता है. (६) ब्रह्मचारी पुरुष पूर्वकालके स्त्रीके साथ भोगेहुवे भोगोंको याद न करे और करे तो जिनरक्ख और रयणादेवीका

दृष्टान्त, जैसे जिनरक्षत रयणादेवीके साथके काम-भोग याद करके लज्चा गया और माण खोये तैसे ब्रह्मचारी पुरुष पूर्वके कामभोगका वारंवार स्मरण करे तो शीलरत्न गुमा देता है (७) ब्रह्मचारी पुरुष हमेशा सरस-स्वादिष्ट आहार करे नहीं और करे तो सन्निपातके रोगीका दुध मिश्रीका दृष्टान्त अर्थात् जिसको सन्निपात-शीत हो गया है उसे दुध मिश्री पीलाई जावे तो वह मर जाता है तैसेही हमेशा सरस पुष्ट आहार करनेवाला ब्रह्मचारी अपना ब्रह्मचर्य खो बैठता है (८) ब्रह्मचारी पुरुष लुक्खा निरस आहारभी दाबरके करे नहीं, अधिक करेतो सेरकी हांडीमें सवासेरका दृष्टान्त-अर्थात् जिस मारेकी (कची मिट्टीकी) हांडीमे सेर धान्य पकता है उसमें सवासेर राधाजावेतो हांडीका कुशल होता है-फट जाती है, तैसे ब्रह्मचारी अधिक भोजन करेतो ब्रह्मचर्य गुमा देता है-नष्ट कर देता है (९) ब्रह्मचारी पुरुषको स्नान शृंगार करना नही-शरीरका मण्डन विभूषा करना नही और करेतो रांकके हाथमें रत्नका दृष्टान्त जिस प्रकार रांक पुरुषमें रत्न रखनेकी योग्यता न होनेसे उसे बाजारमें हाथोंमें उछालता चलता है देखनेवालेका मन चल जाता है और रत्न खोसलीया जाता है वह मूर्ख उसे पेटीमें बंद नही रखता है

तैसेही ब्रह्मचारी पुरुष न्हावे धोवे, शणगार करेतो उनमेंभी शील रत्नको रखनेकी अयोग्यता है स्त्री वगेरेका मन शील रत्नको लुटानेका होजाताहै और ब्रह्मचर्य नष्ट होजाता है

दशमें बोले–दश प्रकारका यति धर्म–(१) खन्ति–अपराधी पर वैरभाव नहीं रखना, क्षमा धारना (२) मुत्ति–लोभ रहित बनना. (३) अज्जवे–सरलता–निष्कपटता. (४) मद्दवे–मार्दव, नम्रता, अहंकारका त्याग (५) लाघवे–भण्डोपगरणादी उपाधि थोडी होना. (६) सच्चे–सच्चाईसे, प्रामाणिकतासे बोलना व आचरण करना. (७) सयमे–शरीर, मन और इन्द्रियोंको काबुमें रखना, वश करके नियममें रखना (८) तवे –आत्मशक्ति बढे, इच्छाशक्ति बढे, मनोबल दृढ होवे उस निमित्से उपवास वगेरा तप करना (९) चियाए –ममताका त्याग करना. (१०) बम्भचेरवासे– शुद्ध आचार पाले, मैथुनसे सपूर्ण निवृत्ति करे– पराङ्मुख रहे.

दश प्रकारकी समाचारी–(१) आवस्सिया–उपाश्रय (स्थानक) बाहर जानेका होवे तब बडे मुनिसे अर्ज करे कि मुझे बाहर जाना जरुरी है (२) निसीहिया– उपाश्रयमें पीछा लौटते वरत गुर्वादिसे कहे मैं अपने

कामसे निवृत्त होकर आ गयाहू (३) आपुच्छणा-खुदके काम होवेतो गुरुसे पुच्छे. (४) पडिपुच्छणा-अन्य मुनियोंके काम होवेता गुरुसे वारवार पुच्छे, (५) उन्दणा-अपनी लाइ हुइ वस्तु वडोंको घामे देनेको कहे (६) इच्छाकार-गुरुसे अर्ज करे कि अगर आपकी इच्छा होवे तो मुझे सूत्रार्थ-ज्ञानदान दीजिये (७) मिच्छाकार-पापकर्मको गुरके सामने मिथ्या दुष्कृत कहे (८) तहकार-गुरके वचनको प्रमाण करे-स्वीकार करे अथवा आप जैसा कहते हो वैसाही है ऐसा कहे (९) अब्भुट्ठाण-गुरु तथा वडे मुनिवर आवे तब सात आठ कदम-पग सामा जावे और पिछा लौटे तब उतना ही पहुचाने जावे (१०) उवसपया-गुरजनोंसे सूत्रार्थ लक्ष्मी पानेके वास्ते हमेशा सावधान रहे और गुरके पासमें रहे.

इग्यारवे बोछे-श्रावककी इग्यारा प्रतिमा-(१) दर्शन प्रतिमा-एक मासकी शुद्ध अतिचार रहित समकित धर्म पाले. (२) व्रत प्रतिमा-दोमासकी-नाना प्रकारके व्रतनियम अतिचार रहित पाले (३) सामायिक प्रतिमा-तीन मासकी अतिचार रहित हमेशां सामायिक करे. (४) पोषधप्रतिमा-चार मासकी-अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वगेरेका पोषध, अतिचार रहित करे (५) कायोत्सर्ग

प्रतिमा-पांच मासकी-हमेशा रात्रिके अन्दर कायोत्सर्ग करे और पांच वातोंका पालन करे "१ स्नान न करे, २ रात्रि भोजन त्यागे, ३ धोतीकी लांग खुली रक्खे, ४ दिनको ब्रह्मचर्य पाले, ५ रात्रिको ब्रह्मचर्यका परिमाण करे" ६ ब्रह्मचर्य प्रतिमा-छ मासकी-निरतिचार पूर्ण ब्रह्मचर्य पाले (७) सचित्त प्रतिमा-जघन्य (कमतीसे कमती) एक दिनकी और उत्कृष्ट (ज्यादे से ज्यादा) सात मासकी-सचित्त वस्तु नही भोगे (८) आरंभ प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट आठ मासकी-आप खुद आरंभ करे नहीं (९) प्रेष्य प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट नव मासकी-दूसरेसे भी आरंभ करावे नहीं (१०) उद्दिष्टवर्ज प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट दश मासकी-इनके वास्ते आरंभ करके कोई वस्तु देवे तो लेवे नहीं खुरमुण्डन करावे-शिखा रक्खे कोई उनसे कुच्छ बात एक वक्त पुच्छे या वारंवार पुच्छे, तब जानते हुवे तबतो हां कहे और नहीं जानते होवे तो ना कहे (११) श्रमण भूत प्रतिमा-उत्कृष्ट इग्यारा मासकी खुरमुण्डन करे या लोच करे साधु जितना ही उपकरण पात्र रजोहरण रक्खे, स्वज्ञातिकी गौचरी करे और कहे कि मैं श्रावक हूं साधु माफक उपदेश देवे. सर्व प्रतिमामें साडे पांच वर्ष लगे.

कामसे निवृत्त होकर आ गयाहू (३) आपुच्छणा-खुदके काम होवेतो गुरसे पुच्छे. (४) पडिपुच्छणा-अन्य मुनियोंके काम होवेतो गुरसे वारवार पुच्छे. (५) छन्दणा-अपनी लाइ हुइ वस्तु वडोंको धार्मे देनेको कहे (६) इच्छाकार-गुरुसे अर्ज करे कि अगर आपकी इच्छा होवे तो मुझे सूत्रार्थ-ज्ञानदान दीजिये (७) मिच्छाकार-पापकर्मका गुरुके सामने मिथ्या दुष्कृत कहे (८) तहकार-गुरुके वचनको प्रमाण करे-स्वीकार करे अथवा आप जैसा कहते हो वैसाही है ऐसा कहे (९) अभ्युट्ठाण-गुरु तथा वडे मुनिवर आवे तब सात आठ कदम-पग सामा जावे और पिछा लौटे तब उतना ही पहुचाने जावे (१०) उवसपया-गुरुजनोंसे सूत्रार्थ लक्ष्मी पानेके वास्ते हमेशा सावधान रहे और गुरुके पासमें रहे.

इग्यारमे बोलें-श्रावककी इग्यारा प्रतिमा-(१) दर्शन प्रतिमा-एक मासकी शुद्ध अतिचार रहित समकित धर्म पाले. (२) व्रत प्रतिमा-दोमासकी-नाना प्रकारके व्रतनियम अतिचार रहित पाले (३) सामायिक प्रतिमा-तीन मासकी अतिचार रहित हमेशां सामायिक करे (४) पोषधप्रतिमा-चार मासकी-अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वगेरेका पोषध, अतिचार रहित करे (५) कायोत्सर्ग

प्रतिमा-पाच मासकी-हमेशा रात्रिके अन्दर कायोत्सर्ग करे और पांच बातोंका पालन करे "१ स्नान न करे, २ रात्रि भोजन त्यागे, ३ धोतीकी लांग खुली रक्खे, ४ दिनको ब्रह्मचर्य पाले, ५ रात्रिको ब्रह्मचर्यका परिमाण करे" ६ ब्रह्मचर्य प्रतिमा-छ मासको-निरतिचार पूर्ण ब्रह्मचर्य पाले (७) सचित्त प्रतिमा-जघन्य (कमतीसे कमती) एक दिनकी और उत्कृष्ट (ज्यादे से ज्यादा) सात मासकी-सचित्त वस्तु नहीं भोगे (८) आरम्भ प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट आठ मासकी-आप खुद आरम्भ करे नहीं (९) प्रेष्य प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट नव मासकी-दूसरेसे भी आरम्भ करावे नहीं (१०) उद्दिष्टत्याग प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट दश मासकी-इनके वास्ते आरम्भ करके कोई वस्तु देवे तो लेवे नहीं क्षुरमुण्डन करावे-शिखा रक्खे कोई उनसे कुच्छ बात एक वरत पुच्छे या वारवार पुच्छे, तब जानते हावे तबतो हा कहे और नहीं जानत होवे तो ना कहे (११) श्रमण भूत प्रतिमा-उत्कृष्ट इग्यारा मासकी क्षुरमुण्डन करे या लोच करे साधु जितना ही उपकरण पात्र रजोहरण रक्खे, स्वज्ञातिकी गोचरी करे और कहे कि मैं श्रावक हू साधु माफक उपदेश देवे. सर्व प्रतिमामें साढे पाच वर्ष लगे

पारमें बोले-भिक्षुकी बारह प्रतिमा नीचे लिखी हुई तेरह पन्थमें हरएक प्रतिमाधारी पाले (१) पहेली प्रतिमा एक मासकी-नियम-

(१) शरीरपर ममता रक्खे नही शरीरकी शुश्रुषा करे नही-देव मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग सम परिणामसे सहन करे

(२) एक दाति आहार और एक दाति पाणी-प्राशुक तथा मेषणिक लेवे (दाति=धार=एक साथ, धार खण्डित हुवे बिना जितना पात्रमें पडे इतनेको दाति कहते है)

(३) प्रतिमाधारी साधु गौचरीके वास्ते दिनके तीन विभाग करे और तीन भागमेंसे चाहे जिस एक विभागमें गौचरी करे

(४) प्रतिमाधारी साधु छ प्रकारसे गौचरी करे (१) पेटीके आकारे (२) अर्ध पेटीके आकारे (३) बेलके मूत्रके आकारे (४) पतग उडे उस तरहँ (५) शंखावर्तन (६) जावता करे तो आवता नही करे और आवता करे तो जावता नही करे

(५) गामके लोगोंको मालुम पड जावे कि यह प्रतिमा धारी मुनि है तो वहा एक रातही रहे और ऐसा मालुम नही पडे तो दो रात्रि रहे उपरान्त जितनी रात रहे उतना प्रायश्चितका भागी बने

(६) प्रतिमाधारी साधु चार कारणसे बोलते है १ याचना करनेको, २ मार्ग पुछनेको, ३ आज्ञा पानेको, ४ प्रश्नके उत्तर देनेको

(७) प्रतिमाधारी साधु तीन स्थानमें निवास करे—१ बागबगीचा, २ श्मशान-छत्री, ३ वृक्षका तला इनकी याचना करे

(८) प्रतिमाधारी साधुको तीन प्रकारकी शय्या—१ पृथ्वी, २ शिला, ३ काष्ट

(९) प्रतिमाधारी साधु जिस स्थानमें है वहा स्त्री प्रमुख आवे तो भयके मारे बाहर निकले नही कोई जबरन हाथ पकड कर काढे तो ईर्यासमिति सहित बाहर हो जावे तथा वहां आग लगे तोभी भयसे बाहर आवे नही कोई बाहर काढे तो ईर्यासमिति पूर्वक बाहर निकल जावे.

(९) प्रतिमाधारी साधुके पगमें कांटा लग जावे और आखमें काटा (धुल तृण प्रमुख) पड जावे तो आप उसे अपने हाथोसे काढे नही

(१०) प्रतिमाधारी साधु सूर्योदयसे सूर्यके अस्त होने तक विहार करे बादमें एक पग भी चले नही.

(११) प्रतिमाधारी साधुको सचित्त पृथ्वीपर बैठना सोना कल्पे नही तथा सचित्त रज लगे हुवे पेरोंसे (पगसे) गृहस्थके यहां गौचरी जाना कल्पे नही

(१२) प्रतिमाधारी साधु माशुक जलसे भी हाथ पग मुह मगुख धोवे नही अशुचीका लेप दूर करनेको धोना कल्पता है

(१३) प्रतिमाधारी साधुके मार्गमे हाथी घोडा अथवा जगल्मी जानवर सामने आये होवे तो भी मुनि भयसे रास्ता छोडे नही—जानवरकी दया खातर अलग हो जाते है तथा रास्ते चलते तडकेसे छायामे और छायासे तडकेम आने नही शीत उष्णताको सम परिणामसे सहन करे.

(२) दूसरी प्रतिमा एक मासकी जिसमे दो दाति अन्न और दो दाति पानीका लेना कल्पता है

(३) तीसरी प्रतिमा एक मासकी जिसमें तीन दाति अन्न और तीन दाति पानी लेना कल्पे इस तरह चौथी, पांचमी, छट्टी, सातमी प्रतिमा भी एक२ मासकी उनमे चार दाति—पांच दाति—छ दाति—सात दाति आहार पानी लेना कल्पे.

(८) आठमी प्रतिमा सात दिनकी—चौविहार एकान्तर तप करे—ग्रामके वाहर रहे तीन आसन करे—चित्ता सुवे, करवट (एक वाजुपर) सुवे, पलांठी (पालखी) लगाकर सुवे परिसहसे डरे नही

(९) नवमी प्रतिमा सात दिनकी उपर प्रमाणे.

इतना विशेष कि तीन आसनमेंका एक आसन करे–दण्ड आसन, लगुट आसन, उत्कट आसन

(१०) दशमी प्रतिमा सात दिनकी उपर प्रमाणे इतना विशेष कि तीनमेंसे एक आसन करे–गोदुह आसन, वीरासन, अम्बकुब्ज आसन

(११) इग्यारमी प्रतिमा एक दिनकी–चौविहार बेला करे, गाम बाहर पग संकोच कर–हाथ पसार कर कायोत्सर्ग करे

(१२) बारमी प्रतिमा एक दिनकी–चौविहार तेला करे, गाम बाहर शरीर त्यागके–नेत्र खुले रखकर–पग संकोच, हाथ पसार–अमुक वस्तुपर दृष्टि लगा कर ध्यान करे–देव मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग सहे इस प्रतिमाके आराधनसे अवधि–मन पर्यव–केवलज्ञान इन तीनमेंका एक ज्ञान होता है और आसनसे चलजावे तो पागल बन जावे, दीर्घ कालका रोग पावे–केवली प्ररूपित धर्मसे भ्रष्ट बने.

इन कुल बारह प्रतिमाओंका काल आठ मासका है.

तेरहमें बोले–तेरह क्रिया स्थान (१) अर्थ दण्ड–खुदके लिये हिंसादि करे (२) अनर्थ दण्ड–निरर्थक या कुत्सित

(८) महाकाल (९) असिपत्र (१०) धनुष (११) कुंभ (१२) वालुक (१३) वैतरणी (१४) खरस्वर (१५) महाघोष

सोलहवें बोले–सूत्रकृतांगके प्रथम श्रुत स्कन्धके सोलह अध्ययन-नाम (१) स्वसमय परसमय (२) वैदारिक (३) उपसर्ग प्रज्ञा (४) स्त्री प्रज्ञा (५) नरक विभक्ति (६) वीर स्तुति (७) कुशील परिभाषा (८) वीर्याध्ययन (९) धर्मध्यान (१०) समाधि (११) मोक्षमार्ग (१२) समवसरण (१३) अथातथ्य (१४) ग्रंथी (१५) यमतिथि (१६) गाथा

सत्तरहवें बोले–सत्तरह प्रकारका संयम (१) पृथ्वीकाय संयम (२) अप्काय संयम (३) तेजस्काय संयम (४) वायुकाय संयम (५) वनस्पतिकाय संयम (६) बेइन्द्रिय संयम (७) तेइन्द्रिय संयम (८) चउरिन्द्रिय संयम (९) पंचेन्द्रिय संयम (१०) अजीवकाय संयम (११) प्रेक्षा संयम (१२) उत्प्रेक्षा संयम (१३) अपहृत्य (परिष्ठापना) संयम (१४) प्रमार्जना संयम (१५) मनःसंयम (१६) वचन संयम (१७) शरीर संयम.

अठारहवें बोले–अठारह प्रकारका ब्रह्मचर्य (१)मनकरके–वचन करके-काया करके औदारिक शरीर सम्बन्धी भोग सेवे नही, सेवावे नही और जो सेवन करते है उन्हें

अर्थके वास्ते हिंसादि करे (३) हिंसा दण्ड–उसने मुझे मारा था–मारता है या मारेगा इस भावसे उसे मारना, (४) अकस्मात दण्ड–मारना किसे था और बिचमें मर जावे दूसरा (५) दृष्टि विपर्यास दृष्टि–दुश्मन जानकर मित्रको मारडालना (६) मृषावाद दण्ड–असत्य भाषण करना (७) अदत्तादान दण्ड चोरी करना (८) अ ध्यत्थ दण्ड–मनमें दुष्ट कल्पना करना (९) मान दण्ड–गर्व करना (१०) मित्र दण्ड–मातापिता मित्र वर्गको अल्प अपराध परभी भारी दण्ड देना (११) माया दण्ड–कपट करना (१२) लोभ दण्ड–लोभ करना (१३) इर्यापथिक दण्ड–रास्ते चालता जीव हिंसा होवे.

चौवदमें बोले–जीवके चौवदा भेद (१) सूक्ष्म एकेन्द्रिय अप र्याप्त (२) सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त (३) बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त (४) बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त (५) बेइन्द्रिय अपर्याप्त (६) बेइन्द्रिय पर्याप्त (७) त्रिइन्द्रिय अपर्याप्त (८) त्रिइन्द्रिय पर्याप्त (९) चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त (१०) चतुरिन्द्रिय पर्याप्त (११) असन्नी पचेन्द्रिय अपर्याप्त (१२) असन्नी पचेन्द्रिय पर्याप्त (१३) सन्नी पचेन्द्रिय अपर्याप्त (१४) सन्नी पचेन्द्रिय पर्याप्त

पन्दरमें बोले–पन्दरा परमाधर्मीदेव (१) आम्र (२) आम्ररस (३) शाम (४) सबल (५) रुद्र (६) वैरुद्र (७) काल

(८) महाकाल (९) असिपत्र (१०) धनुष (११) कुम्भ (१२) बालुक (१३) वैतरणी (१४) खरस्वर (१५) महाघोष

सोलहमें बोले–सूत्रकृतांगके प्रथम श्रुत स्कन्धके सोलह अध्ययन-नाम (१) स्वसमय परसमय (२) वैतालिक (३) उपसर्ग प्रज्ञा (४) स्त्री प्रज्ञा (५) नरक विभक्ति (६) वीर स्तुति (७) कुशील परिभाषा (८) वीर्याध्ययन (९) धर्म ध्यान (१०) समाधि (११) मोक्षमार्ग (१२) समवसरण (१३) अथातथ्य (१४) ग्रंथी (१५) यमतिथि (१६) गाथा.

सत्तरहमें बोले–सत्तरह प्रकारका संयम (१) पृथ्वीकाय संयम (२) अप्काय संयम (३) तेजस्काय संयम (४) वायु काय संयम (५) वनस्पतिकाय संयम (६) बेइन्द्रिय संयम (७) तेइन्द्रिय संयम (८) चउरिन्द्रिय संयम (९) पचेन्द्रिय संयम (१०) अजीवकाय संयम (११) प्रेक्षा संयम (१२) उत्प्रेक्षा संयम (१३) अपहृत्य (परठाना) संयम (१४) प्रमार्जना संयम (१५) मनःसंयम (१६) वचन संयम (१७) शरीर संयम.

अठारहमें बोले–अठारह प्रकारका ब्रह्मचर्य (१)मनकरके–वचन करके–काया करके औदारिक शरीर सम्बन्धी भोग सेवे नही, सेवावे नही और जो सेवन करते है उन्हे

अनुमोदे (प्रशंसे) नही (३ × ३=९ हुवे) तैसेही नव भेद वैक्रिय शरीर सम्बन्धो त्रिकरण त्रिजोगके है

उन्नीसमें बोले–उन्नीस (१९) ज्ञाता सूत्रके अ ययन है (१) उत्क्षिप्त मेघकुमारका (२) धन्नासार्थवाह और विजय चोरका (३) मोरके अण्डोंका (४) काचवा (कूर्म)का (५) शैल्क राजर्षिका (६) तुम्बेका (७) धन्नासार्थवाह और चार वहूओंका (८) मल्लीभगवतीका (९) जिनपाल और जिनरक्षितका (१०) चन्द्रकी कलाका (११) दावानलका (१२) जितशत्रु राजा और सुबुद्धि प्रधानका (१३) नन्दमणिकारका (१४) तेतली पुत्र प्रधान और सुनारकी पुत्री पोटिलाका (१५) नदी फलका (१६) अमरकंकाका (१७) समुद्र अश्वका (१८) सुसीमा दारिकाका (१९) पुंडरीक कुंडरीकका

बीसमें बोले-बीस, असमाधिके स्थानक (१) उतावलमें चाले (२) पुंज्या विना चाले (३) अयोग्य रीतिसे पुंजे (४) पाट पाटला ज्यादा रक्खे (५) वडोंके गुरुजनोके सामे बोले (६) वृद्ध-स्थविर-गुरुका उपघात करे (मृत प्राय. करे) (७) साता-रस-विभूषानिमित्त एकेंद्रिय जीव हणे (८) पलपलमें क्रोध करे (९) हमेशा क्रोधमें जलता रहे (१०) दूसरेके अवगुण खोले-चुगली-निंदा करे (११) निश्चयकारी भाषा बोले (१२) नया

क्लेश खडा करे (१३) उपशमे (मीटे) हुवे क्लेशको पीछा चेताने (१४) अकाले स्वाध्याय करे (१५) सचित्त पृथ्वीसे भरे हुवे हाथोंसे गोचरी करे (१६) एक प्रहर रात्रि बीतने परभी जोरसे बोले (१७) गच्छमें भेद पाडे (१८) क्लेश फैलाकर गच्छमें परस्पर दुःख उपजावे (१९) दिन उगनेसे अस्त होने तक हरदम आहार लिया ही करे (२०) अनेषणिक अप्रासुक आहार लेवे

एकवीसमें बोले–इक्कीस प्रकारके सबल (भारी) दोष (१) हस्तकर्म करे (२) मैथुन सेवे (३) रात्रिभोजन करे (४) आधाकर्मी भोगवे (५) राजपिण्ड भोगवे (६) पांच दोष सेवे–खरीद कियाहुवा, उधार लियाहुवा जबरन खोसा (लिया) हुवा, खास मालिककी रजा विना लियाहुवा, स्थानपर सामा लायाहुवा, आहार वगैरह देवे और साधु उसे लेवे (साधुओं देनेवास्तेही खरीदा होवे, स्वाभाविक तो सब खरीदाजाता है) (७) वारवार त्याग करे और भांगे (८) एक मासमें तीन वख्त कचा जलका स्पर्श करे–नदी उतरे (९) छःउ महीनामें गण–सम्प्रदाय पलटे–पलटना नहीं चाहिये (१०) एक मासमें तीन वख्त माया–कपट करे (११) जिसके मकानमें रहेहों उसीके यहांसे आहार करे–शय्यातर पिण्ड भोगवे (१२) इरादा पूर्वक हिंसा करे

(१३) इरादा पूर्वक झूठ बोले (१४) इरादा पूर्वक चोरी करे (१५) इरादा पूर्वक सचित्त पृथ्वीपर शयन आसन करे (१६) इरादा पूर्वक सचित्त मिश्र पृथ्वी पर शय्या वगैरह करे (१७) सचित्त शिला तथा जिसमें छोटे२ जन्तु रहे वैसे काष्ठ प्रमुख वस्तुपर अपना शयन आसन लगावे (१८) इरादा पूर्वक दश जातकी सचित्त वस्तु खावे-मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाला, पत्र, पुष्प, फल, बीज (१९) एक सालमें दश दफे सचित्त जलका स्पर्श करे-नदी उतरे (२०) एक सालमें दश माया-कपट सेवे (२१) सचित्त जलसे भिगे हुवे हाथसे आहारादि गृहस्थ देवे उसे इरादा पूर्वक लेकर भोगवे

बावीसमें बोले-बावीस प्रकारके परीषह (१) क्षुधा (२) तृषा (३) शीत (४) उष्ण (५) डांस, मच्छर (६) अचेल (वस्त्र रहित) (७) अरति (८) स्त्री (९) चलनेका (१०) स्थिर आसन लगाकर एक जगह बैठे रहनेका (११) शय्या-उपाश्रयका (१२) आक्रोश (१३) वध-प्राणनाश (१४) याचना (१५) अलाभ-मांगी हुई वस्तुका नहीं मिलना (१६) रोग (१७) तृणस्पर्श (१८) जल्लमैल-पसीना तथा मेल (१९) सत्कार पुरस्कार (२०) प्रज्ञा (२१) अज्ञान (२२) अदर्शन-श्रद्धा रहित बननेका

तेवीसमें बोले–सूत्रकृतांगके २३ अ ययन–प्रथम श्रुतस्कधके १६ अ ययन सोलहमें बोलवत्, दूसरे श्रुतस्कधके सात अ ययन (१) पुण्डरीक कमल (२) क्रियास्थान (३) आहार प्रतिज्ञा (४) प्रत्यारयान प्रज्ञा (५) अनगारश्रुत (६) आर्द्रकुमार (७) उदक (पेढाल पुत्र).

चौवीसमें बोले–चौवीस प्रकारके देवता, (१०) भवनपति, (८) व्यन्तर, (५) ज्योतिषी, (१) वैमानिक, कुल २४ हुवे

पचीसमें बोले–पच महाव्रतकी पचीस भावना पहले महाव्रतकी पांच (१) इर्यासमितिभावना (२) मन:समितिभावना (३) वचनसमितिभावना (४) ऐपणासमितिभावना (५) आदानभण्ड मात्र निक्षेपनासमितिभावना दूसरे महाव्रतकी पाचभावना (१) बिना विचार किये बोलना नहीं (२) क्रोधसे बोलना नहीं (३) लोभसे बोलना नहीं (४) भयसे बोलना नहीं (५) हास्यसे बोलना नहीं. तीसरे महाव्रतकी पाच भावना (१) निर्दोष स्थानक मागके लेना (२) तृण वगैरह मागके लेना (३) स्थानक वगैरह सुधारना नहीं (४) स्वधर्मीका अदत्त लेना नहीं और आहारका सविभाग करना (५) तपस्वी ग्लान आदिको वैयावच्च करना. चौथे महाव्रतकी पांच भावना (१) स्त्री, पशु, नपुसक सहित स्थानकमें ठहरना नहीं (२) स्त्रीके साथ वा स्त्री सम्बन्धी कथा

वार्ता करना नहीं (३) स्त्रीके अगउपाग रागदृष्टिसे देखना नहीं (४) पहलेके कामभोग याद करना नहीं (५) सरस तथा बलवान आहार करना नहीं पाचमें महाव्रतकी पांच भावना–(१) भले शब्दपर राग, बुरे शब्दपर द्वेष करना नहीं, तैसेही (२) रूपपर (३)गन्ध पर (४) रसपर और (५)स्पर्शपर रागद्वेष नहीं करना.

छवीसमें बोले–छवीस अध्ययन–दश दशाश्रुतस्कधके, छ बृहत्कल्पके और दश व्यवहारसूत्रके (इनमें साधुका विधिवाद है)

सत्तावीसमें बोले–सत्तावीस साधुके गुण–पाच महाव्रत, पाच इन्द्रियका निग्रह करना चार कषायका विजय करना (५+५+४=१४) (१५) भावसत्य (१६) करण-सत्य (१७) जोग सत्य (१८) क्षमा (१९) वैराग्य (२०) मन समाधारणता (२१) वचन समाधारणता (२२) काय समाधारणता (२३) ज्ञान (२४) दर्शन (२५) चारित्र (२६) वेदना सहिष्णुता (२७) मरण सहिष्णुता

अठावीसमें बोले–अठावीस आचार कल्प (१) एक मासका प्रायश्चित (२) दुसरा एक मास और पांच दिनका (३) तीसरा एक मास और दश दिनका इस तरह पाच२ दिन बढाते हुवे पाच महीने तक कहना इस

प्रकार पचीस उपघातिक है (२६) अनुघातिक आरोपण (२७) कृत्स्न-संपूर्ण (२८) अकृत्स्न-अपूर्ण.

गुनतीसमें बोले-२९ पाप सूत्र. (१) भूमिकम्पशास्त्र (२) उत्पातशास्त्र (३) स्वप्नशास्त्र (४) अंतरीक्ष-आकाशशास्त्र (५) अंगस्फुरणशास्त्र (६) स्वरशास्त्र (७) व्यंजन-तल-मसादि चिह्नशास्त्र (८) लक्षणशास्त्र. ये आठ सूत्ररूप, आठ वृत्तिरूप, आठ वार्तिकरूप, कुल चोवीस हुवे (२५) विकथा अनुयोग (२६) विद्या अनुयोग (२७) मंत्र अनुयोग (२८) योग अनुयोग (२९) अन्य तीर्थिक प्रवृत्त अनुयोग

तीसमें बोले-महामोहनीय कर्मबन्धनेके तीस स्थानक (१) त्रसजीवको जलमें डुबाकर मारेतो (२) त्रसजीवको श्वास रूंधके मारेतो (३) त्रसजीवोंको वाडेमें बंद करके मारेतो (४) तलवारादिसे (शस्त्रसे) मस्तकादि अंगोपांग काटेतो (५) मस्तकपर गीला चमडा बान्ध कर मारेतो (६) ठग होकर गलेमें फांसा डालकर मारे-विश्वासघात करे (७) कपट करके अपना अनाचार-दुष्ट आचार छिपावे-सूत्रार्थ छिपावेतो (८) आप कुकर्म करे और दूसरे निरपराधी मनुष्यपर आरोप लगावे तथा दूसरेकी यशकीर्ति घटानेको झूठा कलंक लगावेतो (९) लोकोंमें अच्छा दिखने

वास्ते-क्लेश करानेके वास्ते सभाके बीचमें मिश्र भाषा बोलेतो (१०)राजाका भंडारी-राजाकी लक्ष्मी हरण करना चाहे-राजा राणीसे कुशील सेवन करना चाहे-राजाके प्रेमीजनोंके मनको पलटना चाहे तथा राजाको राज्याधिकारसे बाहर करना चाहेतो (११) विषयलम्पटी बनकर-परणा हुवा होकर भी कुवारा होनेका कहेतो (१२) ब्रह्मचारी नहीं होते हुवेभी ब्रह्मचारी कहलावेतो (१३) नौकर मालीककी लक्ष्मी लूटे तथा लुटावेतो (१४) जिस पुरुषने अपनेको धनवान् इज्जतवान् अधिकारी बनाया-उस उपका-रीको इर्षा परिणामसे बुराइ करे-हलका बनानेकी चेष्टा करे-उपकारका बदला अपकारसे देवेतो (१५) भरणपोषण करनेवाले राजादिको तथा ज्ञानदाता गुरुको हणेतो (१६) १ राजा २ नगरशेठ तथा ३ मुखीया-बहुल यशवाळे इन तीन जनोंको हणेतो (१७) बहुतसे मनुष्योंका आधारभूत जो मनुष्य है उसे हणेतो (१८) संयम लेनेको तैयार हुवा है उसका दिल हटावेतो तथा संयम लिये हुएको धर्मसे भ्रष्ट करेतो (१९) तीर्थंकरके अवर्णवाद बोलेतो (२०) तीर्थंकर प्ररूपित न्याय मार्गका द्वेषी बनकर-(उसमार्गकी) निन्दा करे तथा उस मार्गसे लोगोंका मन दूर हटावे (२१) आचार्य उपाध्याय-

सूत्र विनयके शिखानेवाले पुरुषोंकी निन्दा करे–उप
हास करेतो (२२) आचार्य उपाध्यायके मनको आ
राधे नहीं तथा अहंकारभावसे भक्ति नहीं करेतो (२३)
अल्प शास्त्रज्ञानका जाणकार होते हुवेभी खुदकी तारीफ
करे तथा स्वाध्यायका वाद करेतो (२४) तपस्वी
नहीं होते हुवेभी तपस्वी कहलावेतो (२५) शक्ति
होते हुवेभी गुर्वादि तथा स्थविर–ग्लान मुनिका विनय
वैयावच्च करे नहीं और कहेकि इन्होंने मेरी वैयावच्च
नही की थी ऐसा अनुकम्पा रहित होवेतो (२६) चार
तीर्थमें भेद पडे एसी कथा–क्लेशकारी वार्ता करेतो
(२७) अपनी तारीफके वास्ते तथा दूसरेके सा
मित्रता करनेका–अधर्मयोगवशीकरणादि प्रयोग करेतो
(२८) मनुष्य तथा देव सम्बन्धी भोग अतृप्तपनेसे-
अत्यन्त आशक्त परिणामसे सेवेतो (२९) महाऋद्धि
वान्–महायशकेधणी देवता है उनके बलवीर्यका
अवगुण–अपवाद बोलेतो (३०) अज्ञानीजीव लोगोंसे
पूजाका गरजी–चारजातिके देवताको नही देखता है
तोभी कहेकि में उन्हें देखता हूं

इकतीसमें बोले–इकतीस गुण सिद्ध महाराजके–आठ कर्मकी
इकतीस प्रकृति नष्ट होनेसे ये गुण प्रगट होते हैं
वास्ते उन इकतीस प्रकृतिको बताते हैं. ज्ञानावरणी

कर्मकी पांच-(१) मतिज्ञानावरणीय (२) श्रुतज्ञाना वरणीय (३) अवधिज्ञानावरणीय (४) मन:पर्यय-ज्ञानावरणीय (५) केवलज्ञानावरणीय. दर्शनावरणीय कर्मकी नव-(१) निद्रा (२) प्रचला (३) निद्रा निद्रा (४) प्रचलाप्रचला (५) थीणद्धि-स्त्यानर्द्धि (६) चक्षुदर्शनावरणीय (७) अचक्षुदर्शनावरणीय (८) अवधिदर्शनावरणीय (९) केवलदर्शनावरणीय. वेदनीय कर्मकी दो प्रकृति-(१) सातावेदनीय (२) असातावेदनीय मोहनीय कर्मकी दो प्रकृति-(१) दर्शनमोहनीय (२) चारित्रमोहनीय आयु कर्मकी चार प्रकृति-(१) नरक आयुष् (२) तिर्यग् आयुष् (३) मनुष्य आयुष् (४) देव आयुष् नामकर्मकी दो प्रकृति-(१) शुभ नाम (२) अशुभ नाम. गोत्रकर्मकी दो प्रकृति (१) उच्च गोत्र (२) नीच गोत्र अन्तराय कर्मकी पांच प्रकृति-(१) दानान्तराय (२) लाभान्तराय (३) भोगान्तराय (४) उपभोगान्तराय (५) वीर्यान्तराय

बत्तीसमें बोले-बत्तीस प्रकारका योग संग्रह-(१) लगेहुवे पापोंका प्रायश्चित लेनेका संग्रह करना (२) दुसरेके लियेहुवे प्रायश्चित्तको और किसीको नही कहनेका संग्रह करना (३) विपत्ति आनेपर भी धर्ममें दृढ रह-

नेका सग्रह करना (४) निरपेक्ष तप करनेका सग्रह करना (५) सूत्रार्थ ग्रहण करनेका सग्रह करना (६) शुश्रुषा टालनेका सग्रह करना (७) अज्ञात कुलकी गोचरी करनेका सग्रह करना (८) निर्लोभी होनेका सग्रह करना (९) बावीस परीषह सहनेका सग्रह करना (१०) साफ दिल-सरल रहनेका सग्रह करना सत्य, सयम रखनेका सग्रह करना (१२) सम्यक्त्व निर्मल रखनेका सग्रह करना (१३) समाधि सहित रहनेका सग्रह करना (१४) पच आचार पालनेका सग्रह करना (१५) विनय करनेका सग्रह करना (१६) धैर्य रखनेका सग्रह करना (१७) वैराग्य रखनेका सग्रह करना (१८) शरीरको स्थिर रखनेका सग्रह करना (१९) विधिपूर्वक अच्छे अनुष्ठान का सग्रह करना (२०) आस्रव रोकनेका सग्रह करना (२१) आत्माके दोष टालनेका सग्रह करना (२२) सब विषयोंसे विमुख रहनेका सग्रह करना (२३) प्रत्याख्यान (पचक्खाण) करनेका सग्रह करना (२४) द्रव्यसे उपाधि, भावसे गर्वादिके त्यागका सग्रह करना (२५) अप्रमादी बननेका सग्रह करना (२६) काले २ क्रिया करनेका सग्रह करना (२७) धर्म ध्यानका सग्रह करना (२८) सवर योगका सग्रह

करना (२९) मरण, आतङ्क रोग उपजने पर मनको क्षुभित नहीं बनानेका संग्रह करना (३०) स्वजनादि को त्यागनेका संग्रह करना (३१) लिये हुवे प्रायश्चितको करनेका संग्रह करना (३२) आराधिक पण्डित मरण होवे वैसी आराधना करनेका संग्रह करना यानि अप्रशस्त जोगोंका निरुंधन करना

तेतीसमें बोले–तेतीस प्रकारकी आसातना (१) गुरु या वडोंके सामने शिष्य अविनयसे चालेतो (२) गुरु आदिके बराबर चालेतो (३) गुर्वादिके पीछेभी अविनयसे चालेतो (४–५–६) गुर्वादिके आगे पीछे या बराबर अविनयसे उभा रहेतो (७–८–९) गुर्वादिके आगे पीछे या बराबर अविनयसे बैठेतो (१०) शिष्य बडे लोगोंके साथ बाहर–जंगल फिरागत जावे और वहासे पहले शौचकर्मसे निवृत्त होकर आगे चला आवेतो (११) शिष्य गुरुके साथ बाहर गया हो और पीछा लोटनेपर इर्यापथिक पहले प्रतिक्रमेतो (१२) कोई पुरुष उपाश्रयमें आवे तब पहले बडे गुरु आदिको बोलना उचित है तथापि पहले शिष्य बोले और गुरु पीछे बोलेतो (१३) रात्रिके समय जब गुरु कहे–अहो आर्य! कौन निन्दमें है औरकौन जागते है? तब आप जागता होते हुवे भी उत्तर देवे नही तो

(१४) जो आहारादि लाया है उस बाबत पहले अन्य मुनिसे कहे और बादमें गुरुसे कहेतो (१५) आहारादि पहले अन्य मुनिको बतावे और बादमें गुरुको बतावेतो (१६) आहारादि पहले अन्य मुनिको आमन्त्रे-थामे और पीछे गुरुको थामेतो (१७) आहारादि गुरुजनोंको पूछे बिनाही अन्य मुनियोंको जिनपर कि उसका प्रेमहै-थोड़ा२ देदेवेतो (१८) बड़ोंके साथ भोजन करते समय सरस-मनोज्ञ आहार झट२ करेतो (१९) गुर्वादिके पुकारने पर भी मौन रहेतो (२०) गुर्वादिके बुलानेपर अपने आसनपर बैठा२ कहे-मैं यहा हू परन्तु आसन छोड उनके पास जावे नहीं इस डरसे कि कहीं कुच्छ काम बतावेंगे (२१) गुरुके बुलाने पर जोरसे तथा अविनयसे कहे कि क्या कहते हो ? (२२) गुर्वादि कहे हे शिष्य ! यह काम (वैयावचादि) तेरे लाभकारी है इसे कर, तब पीछा कहे अगर लाभकारी है तो आपही क्यों नहीं करलेते हो (२३) शिष्य, बडोंके साथ कठोर-कर्कश भाषा वापरे (२४) शिष्य, गुरुजनके साथ वैसेही शब्द वापरे (काममें लावे) जैसे गुरुजन शिष्यके साथ काम लाते है (२५) गुरुजन व्याख्यान-धर्मोपदेश देते हो तब सभाके बिचमें कहे कि आप जो कहते हो वैसा

ख्यान कहा है ? (२६) गुरुजनके व्याख्यानमें यहे कि आपतो भूलते हो यह कहना सत्य नहीं है (२७) गुरुजनके व्याख्यानसे राजी न रहते नाराजी दिखावे (इस विचारसे कि इससे ज्यादे अच्छातो मैं जानता हूं) (२८) गुरुजन व्याख्यान देतेहो तब सभामें भङ्ग डालनेको-विसर्जन करने जैसा शब्द बोले-महाराज गौचरीका या अमुक कामका समय हो गया है (२९) गुरुजन व्याख्यान देते है तब श्रोताजनके मनको व्याख्यानसें नाराज करनेकी चेष्टा करे (३०) गुरुजनका व्याख्यान पुरा बन्द नहीं हुवा हो-समाप्त पुरा हुवा न हो उससे पहलेही आप व्याख्यान शुरु कर देवे तो (३१) गुर्वादिकी शय्या-आसन वगैरहको पगसे ठोकरावे तो (३२) वडोंकी शय्यापर आप उभा रहे, बैठे, सुवे तो (३३) गुरुके शयन-आसनसे अपना शयन उंचा करे या बराबर भी करे और उसपर सुवे बैठे तो आशातना लागे

इति शुभम्



॥ श्रीवीतरागायनम ॥

संक्षिप्त धर्मपरीक्षा.

सुशिष्य विनयपूर्वक गुरुमहाराजसे प्रश्न करता है और गुरुमहाराज योग्य उत्तर देते है

ष्य–हे भगवन्! संसारमें जितने जीव है सबको धर्म शब्द अति प्रिय क्यों लगता है?

रु–हे शिष्य! इसमें आश्चर्य करनेका कोई कारण नहीं है तुझे आश्चर्य क्यों होता है?

शिष्य–हे महाभाग! मुझे आश्चर्य इस बातपर होता है कि सब जीव धर्मके यथार्थ स्वरूपको जानते नहीं, तोभी उन्हें अवश्य धर्म शब्द बहुतही प्रिय प्रतीत होता है

गुरु–हे चिरजीव! धर्म जीवका निज स्वरूप है–धर्मही जीवका स्वभाव है इस वास्ते धर्म शब्द सबका प्रिय बनताहै. दृष्टान्त समझिये कि जब नाग (सर्प) का मन्त्र बोला जाता है तब वह उसको सुनकर बहुत राजी होता है और इतना प्रसन्न चित्त होजाता है कि उसका छोडा (वमन किया) हुवा विष–जहर पीछा चूस लेता है और इसका कारण यह है कि उस नाग मन्त्रमें उसके कुलका वर्णन किया जाता है और वह नाग निजके कुल–वंशका वर्णन सुनकर आनंदमें लीन बन जाता है,

इसी प्रकार धर्मभी-जीव मात्रका निज स्वभाव होनेसे जीव जबर धर्म शब्द सुनता है उसको बडा प्रिय लगताहै

शिष्य-हे स्वामिन् ससारमें प्राय सब लोग ऐसा कहते है कि धर्म देहसे-शरीरसे निपजता है (पैदा होता है-बनसक्ता है) और आपने धर्मका जीवका स्वरूप निरूपण किया है-बताया है इस लिये इस विषयमें विशेष प्रकाश डाल नेको अधिक विवेचन करनेको कृपा करे

गुरु-हे आयुष्मन ! चेतना जीवका लक्षण है बस वही उसका धर्म है चेतनामें अनत गुण समाये है-रहते है उनमें तीन गुण मुख्य है (१) सम्यग्ज्ञान (२)सम्यग्दर्शन (३) सम्यक्-चारित्र और यह चेतना धर्म सदा जीवके पास रहता है निगोद (महा कनिष्ट) अवस्थामें भी चेतनाधर्म जीवसे निराला नही हुवा वहा परभी चेतना हमेशा बनी रही इतना जरर हुवाकि यह चेतनाधर्म कायम होते हुवेभी जीव इसे जान-पहिचान सका नही-भूल रहा. जैसोक-किसी बालककी बाल्यावस्थामें उसके माता-पिताने बालकके गलेमें चिन्तामणिरत्न (चिताको चूरने-वाला-सब मनोरथको पुरनेवाला रत्न) बान्ध दिया और बालकमें समय आनेके पहीलेही वे मातापिता मरगये लडका वहा तो हुवा परन्तु अशुभ कर्म प्रगट होनेसे वह निर्धन-दारद्री हो गया और उस जवान (बालक)को यह खबर

नहीं कि दरिद्रताका नाश करनेवाला चिन्तामणि उसीके पास है–उसीके गलेमें है. बादमें किसी सज्जन मनुष्यने उसको कहा कि हे भाई! तेरे पास चिन्तामणि है. दरिद्री क्यो बन रहा है? उस मणिको काममे लाव, तेरा सब दारिद्र्य क्षण मात्रमे नष्ट हो जावेगा परन्तु उस युवकको इस बात पर विश्वास नहीं आया–उस सज्जन पुरुषका कहना नहीं माना, कारण कि उसके पूर्व अशुभ कर्मोका जोर था अर्थात् अन्तराय कर्मका उदय बहुत बलवान था, उसे दुःख उठाना (सहना) बाकीथा, उससे बारबार चेताने परभी उस युवा (लडके) को श्रद्धा न आई और दरिद्री बना रहा, इसी प्रकार जिस जीवको बहुत संसारका उदय है–संसारमें परिभ्रमण करना बाकी है उसको सद्गुरु द्वारा अनेक यत्न समझाया जाने परभी, चेतनाधर्म पासही होते हुवेभी, विश्वास नही होता चेतनाधर्म जानता नहीं–मानता नहीं अर्थात् निज धर्मका भूल रहा है औरभी इसी बातको समझानेके वास्ते दूसरा दृष्टान्त दीया जाता है जैसे–किसी मनुष्यके घरके भीतरमें धन गडा हुवा है परन्तु घरके (वर्तमान) मालिकको इस बातका ज्ञान नहीं. किसी जानकार मनुष्यने उपकार बुद्धिसे, उस मालिकको कहाकि हे भाई! तेरे घरमे बहुत दोलत गडी हुई–दबायी हुई है. इस मनुष्यके अन्तराय कर्म कमजोर था दरिद्रावस्था मिटने वालीथी, इससे

सज्जनके वचनपर वरके मालिकको विश्वास आगया और प्रयत्न द्वारा उस खजाना-बेनाम द्रव्यको पाकर सुखी हुवा इसी तरह सर्वज्ञ भाषित चेतनाधर्म इस जीवके पासही है सद्गुरुका संयोग मीलने पर-सद्गुरुके मुखसे यह बात सुनकर उस भव्य-लघुकर्मी जीवका विश्वास आ जाता है और प्रयत्न द्वारा निज चेतना धर्म प्राप्त करके परम सुखी हो जाता है

शिष्य-हे भगवन्' जीवकी निज वस्तु उसके पासही है तोफिर कौनसी वस्तु प्राप्त करना बाकी रहा ? अथवा उसे यह जीव कैसे भूल गया है वा खो बैठा है ?

गुरु-हे भव्य ! यह जीव अनादि कालसे रागद्वेष वश हो कर अपने चेतना धर्मको भूला हुवा है और वह चेतनाधर्मभी परवस्तु के निमित्तसे नहींजैसा हो रहा है जैसे कि एक द्रह-जलागार पाणीसे पूर्ण भरा है उस जलमें तीन मुख्य गुण है-निर्मलता-मधुरता-शीतलता परन्तु जब वह जलाशय सेवालसे छा गया-ढक गया, तब वे गुण वैसे के वैसे न रहे वे गुण लुप्तसे हो गये अब पहले जैसी शीतलता न रही, मधुरता न रही और निर्मलता तो बिल्कुल ही अदृश्य हो गई तैसेही जीवके चेतना धर्मको समझना औरभी यह समझा देना ठीक है कि सेवाल बाहरके कुच्छ निमित्त पाकर जलसे ही पैदा होती है और उसी जलकी